Rigveda Yajurveda
Samaveda Atharvaveda
ओ३म्
AUM

वेदाङ्ग
(Vedang)
(KNOWLEDGE FROM THE VEDAS)

आर्य प्रतिनिधि सभा फीजी - प्रचार कमीटी
Arya Pratinidhi Sabha Fiji
P.O. Box 4245, Samabula
Phone / Fax 386044
जुलाई - सप्तम्बर प्रकाशन १९९९
अंक २२

संस्कार

विवाह संस्कार

पिछले अंक से आगे

मधुपर्क से गृहिणी को शिक्षा दी गई है कि पाकशाला में भोजन कैसा बनाना चाहिए। भोजन ऐसा हो जिसमें दही, शहद और घी के गुण हों। उपर्युक्त विवेचन के अनुसार भोजन ऐसा होना चाहिए -

(१) जो वात, पित्त और कफ - इन तीनों को बराबर रक्खे। इन तीनों के बराबर न होने से रोग उतपन्न होते हैं।

(२) वह भोजन आयु को बढ़ाने वाला और शरीर में शक्ति देने वाला हो। भोजन मधु की भान्ति माधुर्यगुणयुक्त और रुचिकर हो। मधु में एक विशेषता और है। संसार के अन्य पदार्थ दूसरों को बिगाड़कर या समाप्त करके बनते हैं, जैसे गुड़ अथवा चीनी बनने पर गन्ना समाप्त हो जाता है, परन्तु मधु के बनाने की प्रक्रिया यह है कि फूल आदि जिनसे मधु संगृहीत किया जाता हैं वे भी नष्ट नहीं होते और मधु भी तैयार हो जाता है। इसी प्रकार गृहस्थ की आजीविका भी ऐसा होनी चाहिए जिसमें दूसरों को कष्ट न हो, दूसरों का गला न काटा जाए।

वर मधुपर्क को अपने हाथ में लेकर यह वाक्य बोलता है -

ओम् मित्रस्य त्वा चक्षुषा प्रतीक्षे ॥ -पार. १।३।१६

हे प्रभु ! इस मधुपर्क को मैं मित्र की दृष्टि से देखता हूं।

खाने का पदार्थ जब भी हमारे सामने आये तब हम उसे मित्र की दृष्टि से देखें। अप्रसन्नता अथवा अरुचि से खाया गया बढ़िया-से बढ़िया भोजन शरीर का भाग नहीं बनता। जिस पदार्थ में खाने वाले की रूचि होती है, वह न केवल अधिक स्वादिष्ट ही लगता है अपितु अधिक लाभदायक भी होता है।

वर मधुपर्क को बायां हाथ में लेकर प्रार्थना करता है - हे सच्चिदानन्दस्वरूप परमात्मन् ! वायु, नदी और ओषधियां मधुगुणवाली हों। रात्रि और सुबहकाल, पृथिवी और अन्तरिक्ष-मण्डल हमारे लिए कल्याणदायक हों। वनस्पतियां माधुर्यगुणयुक्त हों। सूर्य हमारे लिए सुखकर होकर तपे और गाय आदि पशु खूब दूध देने वाले हों।

ऐसी भावना करके वर उस मधुपर्क से पूर्व आदि चारों दिशाओं में और ऊपर की ओर छींटे देता है। मधुपर्क के छींटे देता हुआ वर यह भावना व्यक्त करता है कि मधुपर्क जैसे उत्तम-उत्तम पदार्थों की सर्वत्र वृद्धि हो, सभी मनुष्यों को इस प्रकार के पदार्थ खाने को मिले जिससे सभी नागरिक हृष्ट-पुष्ट, बलिष्ठ और आनन्दित रहें।

(३) गोदान

मधुपर्क खाने के बाद गोदान की विधि होती है। गौ वैदिक संस्कृति की प्रतीक है। गौ नहीं तो घर नहीं। यह गौ इसलिए दी जाती है कि इसके दूध आदि पदार्थों का सेवन कर के घर के सभी सदस्य नीरोग और स्वस्थ रह सकें। विवाह - अवसर पर गोदान का विधान कर ऋषि -मुनियों ने गोरक्षा का सुन्दर उपाय ढूंढ निकाला था। आजकल गौ के स्थान पर धन आदि दिया जाता है।

(४) कन्या समर्पण

गोदान की विधि के पश्चात् कन्या का पिता अपनी कन्या का दाहिना हाथ वर के दाहिने हाथ में सौंपता है। इसी कार्य को कन्या समर्पण कहते हैं। यहां पिता, कन्या को जो गहने आदि देता है वह स्त्री धन ही माना जाता है। संसार -यात्रा में कभी संकट आने पर यह धन सहायक हो सकता है। इस रूप में पिता अपनी सम्पत्ति का कुछ अंश अपनी पुत्री को दे देता है - जोकि अन्य रूप में उसे नहीं मिलेगा।

(५) प्रतिज्ञा मन्त्र

वर-वधू दोनों निम्न मन्त्र का उच्चारण करें -

ओम् समञ्जन्तु विश्वे देवा समापो हृदयानि नौ।
सं मातरिश्वा सं धाता समुदेष्ट्री दधातु नौ ॥ ऋ. १०।८५।४७

अर्थ - हे यज्ञशाला में बैठे विद्वान् लोगों ! हम दोनों अपनी प्रसन्नता से गृहस्थाश्रम में प्रवेश कर रहे हैं। हम दोनों के हृदय जल के समान मिल जाएं। जैसे प्राण वायु सभी को प्रिय है, उसी प्रकार हम एक दूसरे के प्रिय बनेंगे। जैसे परमात्मा इस सारे संसार को धारण कर रहा है, उसी प्रकार हम दोनों एक दूसरे को धारण करेंगे। विवाह की मुख्य भावना है, दो हृदयों का मिलन। हमारे हृदय इस प्रकार मिल जाएं जैसे दो जल आपस में मिल जाते हैं।

संसार में अन्य पदार्थ मिल जाएं तो उन्हे अलग किया जा सकता है। उद्धारण के रूप में रेत में चीनी मिल जाए तो चींटी उसे अलग कर देती है। दूध में पानी मिल जाए तो हंस नामक पक्षी उसे अलग कर देता है। परन्तु संसार में न तो कोई ऐसा पशु-पक्षी है और न आज तक वैज्ञानिक ही किसी ऐसे यन्त्र का आविष्कार कर सके हैं जो दो कुओं के मिले हुए पानी को अलग कर सके। जैसे दो कुओं के जल मिलकर अपना नाम और रूप छोड़कर एक हो जाते हैं, उसी प्रकार हमारे हृदय भी मिलकर एक हो जाएं। वधू का मन वर और वर का मन वधू के अतिरिक्त अन्य किसी पुरुष अथवा स्त्री के लिए न हो।

(६) पत्नी के प्रमुख्य कर्त्तव्य

विवाह संस्कार के पश्चात् वधू वर के साथ पतिगृह में जाएगी, वहां उसका व्यवहार कैसा हो - इस भावना को वर निम्न मन्त्र द्वारा प्रकट करता है -

ओं भूर्भुवः स्वः। अघोरचक्षुरपतिघ्न्येधि शिवा पशुभ्यः सुमनाः सुवर्चाः। वीरसूर्देवृकामा स्योना भव द्विपदे शं चतुष्पदे ॥ ऋ १०.८५.४४

अर्थ - पति से विरोध न करने वाली, हे सुन्दर अङ्गवाली ! सच्चिदानन्द स्वरूप परमात्मा की कृपा और अपने पुरुषार्थ से तू सबके साथ प्रेममय व्यवहार करने वाली हो। पशुओं के लिए कल्याणकारिणी बन। पवित्र अन्तः करण से युक्त और सदा पुष्प की भान्ति हंसते एवं मुस्कराते हुए रहना। शुभ गुणों और विद्या से सुप्रकाशित रहना। वीर पुत्रों को ही जन्म देना। देवरों = छोटे भाइयों के साथ प्रेमपूर्वक व्यवहार करना। संक्षेप में, घर के मनुष्यों और पशुओं सब के साथ ऐसा व्यवहार करना कि सबको सुख की प्राप्ति हो।

पत्नी इस का उत्तर देती है-

ओं प्र मे पतियानः पन्थाः कल्पतां शिवा अरिष्टा पतिलोकं गमेयम् ॥ गो. गृ. २।१।२०

अर्थ - मेरे पति का जो मार्ग है (धर्म का मार्ग), वही मेरा मार्ग है। आप जैसा (धर्म अनुसार) मुझे आदेश देंगे मैं उसका पालन करूंगी जिससे मैं सुख पाती हुई निर्विघ्न होकर मोक्ष को प्राप्त करूं।

(७) अग्निहोत्र

वैदिक धर्मियों के सभी कृत्य अग्नि को साक्षी करके किये जाते हैं अतः विवाह की प्रमुख्य विधियों के आरम्भ होने से पूर्व यहां सामान्य होम प्रारम्भ होता है। इसी समय पुरोहित की स्थापना भी होती है।

(८) पांच विशेष आहुतियां

सामान्य यज्ञ के बाद पांच विशेष आहुतियां देने का विधान है। इन पांच आहुतियां को देते समय वधू अपने दाहिने हाथ को वर के दाहिने कन्धे पर रखती है। ये पांच आहुतियां घर में प्रतिदिन होने वाले पञ्चमहायज्ञों की ओर संकेत करती है। प्रतिदिन प्रत्येक परिवार में यथाशक्ति इन यज्ञों का अनुष्ठान होना ही चाहिए। पत्नी अपने पति के कन्धे पर हाथ रखकर यह भावना व्यक्त करती है कि आपकी अनुपस्थिति में मैं इन यज्ञों को करूंगी, परन्तु इन में जो खर्च होगा उस को आप को ही पूरा करना होगा।

बाकी अगले अंक में